दैनिक भास्कर डूंगरपुर भास्कर 29-06-2025

राजस्थानी भक्ति परंपरा और वागड़ अंचल विषयक परिसंवाद का आयोजन

भास्कर संवाददाता | डूंगरपुर

डूंगरपुर. मंच से संबोधित करते अतिथि।

राजस्थानी भक्ति परम्परा मन और चित्त को छूने वाली है। मन संकल्प से जुड़ा होता है, चित्त चेतना से। जब मनुष्य अहंकार से मुक्त होता है, तब उसका मन निर्मल होता है और यही निर्मलता भक्ति कहलाती है। यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर अर्जुनदेव चारण ने शनिवार को व्यक्त किए। वे स्थानीय साईं पैलेस होटल में आयोजित राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में बोल रहे थे।

आयोजन साहित्य अकादेमी और राजस्थान बाल कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। परिसंवाद के संयोजक हर्षवर्धन सिंह राव ने कहा कि यह आयोजन जिले के साहित्यिक परिवेश में नई ऊर्जा लाएगा। मुख्य अतिथि उपेंद्र अणु ने कहा कि वागड़ अंचल की भक्ति परम्परा प्राचीन और गौरवशाली रही है। इसमें मावजी महाराज, गोविंद गुरु और गवरी बाई का योगदान उल्लेखनीय रहा है। विशिष्ट अतिथि राजस्थान बाल कल्याण समिति के निदेशक मनोज गौड़ ने कहा कि राजस्थानी भाषा और उसमें रचा गया साहित्य हमारी अस्मिता से जुड़ा है। इसे उजागर करना हमारा कर्तव्य है। साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण में अकादेमी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में किए जा रहे साहित्यिक कार्यों की जानकारी दी। उद्घाटन सत्र का संचालन दिनेश प्रजापति ने किया। वागड़ के प्रतिष्ठित लेखक भोगीलाल पाटीदार को बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा पर समारोह में भव्य अभिनंदन किया गया। यह सम्मान साहित्य अकादेमी में राजस्थानी संयोजक डॉ. अर्जुनदेव चारण के सानिध्य में हुआ। साहित्यिक सत्रों की अध्यक्षता डॉ. सुरेश कुमार सालवी ने की। पहले सत्र में राजेंद्र पंचाल ने कृष्ण भक्ति परम्परा और वागड़ अंचल, सतीश आचार्य ने राम भक्ति परम्परा और वागड़ अंचल पर आलेख प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में घनश्याम सिंह भाटी ने कल्लाजी महाराज और राजस्थानी भक्ति परम्परा, डॉ. रेखा खराड़ी ने आदिवासी भक्ति साहित्य पर विचार रखे। सत्रों का संचालन सूर्यकरण सोनी ने किया। मुख्य अतिथि ज्योतिपुंज ने कहा कि यह परम्परा भारतीय सनातन भक्ति परम्परा से जुड़ी है। यह मानवता, प्रकृति संरक्षण, जीवदया और लोक कल्याण की भावना को जाग्रत करती है। समापन सत्र का संचालन रामचंद्र भारती ने किया। संयोजक हर्षवर्धन सिंह राव ने सभी अतिथियों का आभार जताया।समारोह की शुरुआत मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन से हुई। इस अवसर पर डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. सुनील पंड्या, डॉ. प्रवीण पंड्या, डॉ. मनोहरसिंह राव, डॉ. जयंत यादव, भारती जोशी, महेश देव नंदोड़ सहित कई रचनाकार, साहित्य प्रेमी और शोध छात्र मौजूद रहे।